पाठ 7: स्वयं प्रकाश (नेताजी का चश्मा)

1. लेखक परिचय (Author Introduction)

- **लेखक का नाम:** स्वयं प्रकाश (समकालीन हिंदी कहानी के महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर)।
- **प्रमुख रचनाएँ:** सूरज कब निकलेगा, आएँगे अच्छे दिन भी, संधान।
- **विशेषता:** इनकी कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन की विडंबनाओं और समाज की सच्चाई का अत्यंत मार्मिक और व्यंग्यात्मक चित्रण मिलता है।

2. पाठ का प्रसंग (Context of the Chapter)

यह कहानी देश-प्रेम और आज़ादी के प्रति सम्मान की भावना पर आधारित है। एक छोटे से कस्बे में लगी नेताजी सुभाष चंद्र बोस की संगमरमर की मूर्ति पर चश्मा न होना और एक ग़रीब चश्मेवाले द्वारा उस पर असली चश्मा लगाना—यह पूरी कहानी इसी घटना के इर्द-गिर्द घूमती है।

Scholarbit

3. विस्तृत सारांश (Detailed Summary)

कस्बे का दृश्य: एक छोटे से कस्बे के चौराहे पर नेताजी की संगमरमर की मूर्ति लगाई गई, जिसे शायद स्थानीय स्कूल के मास्टर मोतीलाल जी ने जल्दबाजी में बनाया था, इसलिए वे मूर्ति पर चश्मा बनाना भूल गए।
हालदार साहब का आश्चर्य: हालदार साहब कंपनी के काम से वहाँ से गुज़रते थे। वे देखते कि मूर्ति पत्थर की है, लेकिन उस पर चश्मा असली (रियल) लगा है और वह भी हर बार बदल जाता है।
पानवाले से जानकारी: चौराहे के पानवाले ने बताया कि यह काम **'कैप्टन'** नाम का एक चश्मेवाला करता है। अगर किसी ग्राहक को मूर्ति पर लगा फ्रेम पसंद आ जाए, तो कैप्टन वह फ्रेम ग्राहक को दे देता है और मूर्ति पर दूसरा चश्मा लगा देता है।
कैप्टन की मृत्यु और सरकंडे का चश्मा: हालदार साहब सोचते थे कि कैप्टन कोई फौजी होगा, लेकिन वह एक बूढ़ा, लँगड़ा और ग़रीब आदमी था। एक दिन पानवाले ने दुःखी होकर बताया कि कैप्टन मर गया। हालदार साहब ने सोचा कि अब नेताजी की मूर्ति हमेशा बिना चश्मे के रहेगी। लेकिन अगली बार उन्होंने मूर्ति पर सरकंडे (बाँस जैसी घास) का बना चश्मा देखा, जिसे बच्चों ने बनाया था। यह देखकर वे भावुक हो गए।

4. मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण (Character Sketches)

- **कैप्टन चश्मेवाला:** शारीरिक रूप से कमज़ोर, बूढ़ा और लँगड़ा था। लेकिन वैचारिक रूप से वह एक सच्चा देशभक्त था। नेताजी की बिना चश्मे वाली मूर्ति उसे आहत करती थी। उसमें देशभक्तों के प्रति असीम सम्मान था।
- **हालदार साहब:** एक संवेदनशील, देशभक्त और ज़िम्मेदार नागरिक। वे कैप्टन के काम की कद्र करते थे और उसकी मृत्यु पर बहुत दुःखी हुए।
- **पानवाला:** काला, मोटा और खुशमिजाज़ व्यक्ति। वह हर समय पान चबाता रहता था। वह थोड़ा असंवेदनशील था क्योंकि उसने कैप्टन का मज़ाक उड़ाया था (उसे 'पागल' कहा था), लेकिन कैप्टन की मौत पर उसकी आँखें भी नम हो गई थीं।

5. पाठ का मूल भाव / संदेश (Central Theme)

यह कहानी संदेश देती है कि **देशभक्ति किसी विशेष वर्ग (जैसे फ़ौज) की बपौती नहीं है**। देश का हर नागरिक, चाहे वह ग़रीब हो, कमज़ोर हो या बच्चे हों, अपने-अपने तरीके से देशभक्ति दिखा सकता है। बच्चों द्वारा बनाया गया सरकंडे का चश्मा यह विश्वास जगाता है कि देश की भावी पीढ़ी में भी देशभक्ति की भावना जीवित है।

6. महत्त्वपूर्ण बिंदु (Key Points for Exam)

- **मास्टर मोतीलाल:** ड्राइंग मास्टर, जिन्होंने महीने भर में मूर्ति बनाकर पटक देने का वादा किया था।
- **नेताजी की मूर्ति:** संगमरमर की बनी थी, बस आँखों पर चश्मा नहीं था।
- **होम देना:** (कुर्बान कर देना) हालदार साहब उन लोगों पर दुःखी होते हैं जो आज़ादी के लिए सब कुछ कुर्बान करने वालों पर हँसते हैं।
- **सरकंडे का चश्मा:** उम्मीद की किरण, कि बच्चों में देशभक्ति बची है।

Schorbit